

---

# Shri Devarshi Chatushshloki

श्रीदेवर्षियतुश्श्लोकी

## Document Information

---

Text title : Shri Devarshi Chatushshloki

File name : devarShichatushshlokI.itx

Category : deities\_misc, gurudev, nimbArkAchArya, chatuHshlokI

Location : doc\_deities\_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 28, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Devarshi Chatushshloki

---

### श्रीदेवर्षियतुश्श्लोकी

---



वीणाकराभोज-सुशोभमानं

गोविन्दनामानि सदोच्चरन्तम् ।

नित्यं प्रसन्नं हरिचित्तद्वयं-

ऋषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥ १ ॥

अपने करकमलों में सदा सर्वदा वीणा को धारण करने से जो परम शोभायमान है तथा प्रतिपल श्रीगोविन्द के मनोहर मधुर नामों का अपनी मञ्जुल स्वरलहरी से गायन करते हुआ सतत प्रसन्न, श्रीहरि के मन-रूप देवर्षिवर श्रीनारदजी का समाश्रय पूर्वक स्मरण नमन करते हैं ॥ १ ॥

भवाटवीतापनिरासदक्षं

कारुण्यपूर्णा हरिभक्तिवीनम् ।

आर्ताऽऽर्तिपुञ्जाऽऽहरणे वरेण्य-

ऋषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥ २ ॥

धस भवारण्य के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक धन त्रिविध तापों के निवारण करने में अतीव यत्न करुणास्वरूप सर्वेश्वर श्रीहरि राधामाधव की पराभक्ति में निरन्तर संलग्न और दृग्भीजनों के नानाविध दृग्भों के परिशमन में परम श्रेष्ठ देवर्षिवर्य श्रीनारदजी का परम अवलम्ब और स्मरण ही ऐकमात्र आधार हैं ॥ २ ॥

निम्बार्कदीक्षागुरुमर्थनीयं

श्रीभक्तिसूत्राऽद्भुतसृष्टिकारम् ।

सङ्गीतशास्त्राऽग्रमहाप्रसिद्ध-

ऋषीश्वरं नारदमाश्रयेऽहम् ॥ ३ ॥

सुदर्शनयकावतार श्रीभगवन्निम्बार्कव्याख्यरणों के दीक्षा गुरु श्रीगोपालमन्त्रोपदेशक जो परम वन्दनीय समर्थनीय हैं । सङ्गीतशास्त्र के महाभर्मज्ञता और सर्वाग्रगण्यता में जो अतिशय प्रसिद्ध हैं । नारदभक्तिसूत्र अथवा नारद-पाण्ड्यरात्र के रचयिता अथवा उसमें जो दिव्यतम अद्भुत रसवृष्टि कर रससुधासिन्धु को आपूरित किया है, वस्तुतः वल अवर्णनीय है, जैसे परम देवर्षिवर श्रीनारदजी की प्रपन्नता प्राप्त कर उनका चिन्तन ही ज़ुवन का सार सर्वस्व हैं ॥ ३ ॥

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जधाम्नि

सम्भीस्वरूपेण विराजमानम् ।

राधानिकुञ्जेशपदाब्जभृङ्ग-

मृषीश्वरं नारदमाश्रयेऽडम् ॥ ४ ॥

श्रीवृन्दावन के नित्यनिकुञ्जधाम में जो नित्य सडयरी सम्भीरूप से सुशोभित हैं, श्रीराधानिकुञ्जविहारी के श्रीयुगल-  
यरणाम्भोजरज के दिव्य भृङ्ग रूप में पुलकायमान देवर्षिवर श्रीनारदशु की प्रपत्ति ही अेकमात्र अवलम्ब है ॥  
४ ॥

श्रीदेवर्षि-यतुश्श्लोकी रसभक्तिप्रदायिका ।

राधासर्वेश्वराद्यैर्न शरणान्तेन निर्मिता ॥ ५ ॥

श्रीयुगलरसभक्तिप्रदायक श्रीदेवर्षि यतुश्श्लोकी जिसका प्राणयन उन्हीं की कृपाजन्य दुष्ट है यथार्थ में यड उन्हीं  
देवर्षिवर का कृपाप्रसाद है ॥ ५ ॥

एति श्रीदेवर्षियतुश्श्लोकी समामा ।

Proofread by Mohan Chettoor

---

*Shri Devarshi Chatushshloki*

pdf was typeset on January 28, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

